

Padma Bhushan



DR. S. L. BHYRAPPA

Dr. S L Bhyrappa is a retired Professor of Philosophy in Regional College of Education (NCERT), Mysore.

2. Born on 20th August, 1931 in an utterly poor family in a village called Santheshivara of Channarayana Patna taluq Hassan Dist. of Karnataka, Dr. Bhyrappa lost his mother, an elder sister and elder brother out of plague and his younger brother due to lack of medical help. He earned his living doing different works and continued his education. His experience of death prompted him to study philosophy.

3. Dr. Bhyrappa became a Lecturer in Philosophy in a College at Hubballi for two and a half years and then in Sardar Patel University of Gujarat for six years. He did his Ph.D on 'Truth and Beauty' from Baroda University. Then, he joined NCERT at New Delhi from 1967 to 1971. He was a National Professor for 5 years. He took to writing novels from 1962 and so far, he has published 25 novels and 4 critical works.

4. Dr. Bhyrappa has traveled in almost all the countries of the world including Antarctica and the Arctic. He has travelled and stayed in villages of different parts of India and discovered that the whole of India is culturally one. This gave him a vision of oneness of India. With his study of India's history, music, dance and temples, he explored the oneness of the country in almost all of his novels. He has been one of the highest sold novelists of the country. His novels are translated into most of Indian languages like Marathi, Gujarati, Panjabi, Odissi, Hindi, Bengali, Telegu, Tamil, Malayalam etc., in addition to English. Seven of his novels are translated into Sanskrit and they are reprinted 4-5 times in Sanskrit.

5. His Novel 'Mandra' has won 'Saraswathi Samman' award. Original Kannada novel 'Avarana' has been reprinted 65 times in Kannada, 21 times in Marathi, 22 times in English. 'Daatu' which got 'Sahitya Academy Award' has been translated into all the 14 Indian languages. 'Sakshi' gone into 12 reprints. 'Thantu' got translated into English, Marathi, Hindi and Sanskrit. 'BITTI' (Auto biography of Shri Bhyrappa) reprinted 16 times. Many scholars have earned Ph.D by writing thesis on his novels. Most of these thesis are recommended for publications by the examiners and these publications have earned appreciations. Vamshavruksha, Godhuli, Mathadana, Nayi-Neralu, Grihabhanga all these were filmed and have received best film awards and best story awards and best directions.

6. Dr. Bhyrappa has been conferred honorary doctorates from seven Universities. He was conferred Sahitya Academy Award for his novel 'DAATU (Crossing Over)'. He was conferred Fellowship of Sahitya Academy, which is the highest honor that Sahitya Academy confers on a very senior writer. His novel 'Parva' is recognized by Sahitya Academy as the best Indian novel of the 20th Century. 'Parva' is also translated into Chinese and Russian languages by the selection of Central Government. He was awarded 'Saraswathi Samman' for his novel 'Mandra'. He was awarded by Assam Sahitya Parishad. He was awarded Padma Shri Award in 2016.



डॉ. एस. एल. भैरप्पा

डॉ. एस. एल. भैरप्पा क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय (एनसीईआरटी), मैसूर के सेवानिवृत्त प्राध्यापक हैं।

2. 20 अगस्त, 1931 को कर्नाटक के हसन जिले के चन्नाराय पटना तालुक के संथेशिवारा नामक गाँव में एक बेहद गरीब परिवार में जन्मे, डॉ. भैरप्पा की माँ, एक बड़ी बहन और बड़े भाई का प्लेग से देहांत हो गया और चिकित्सा सहायता की कमी के कारण उनके छोटे भाई की मृत्यु हो गई। उन्होंने अलग-अलग काम करके अपना जीवनयापन किया और अपनी शिक्षा जारी रखी। मौत को करीब से देखने के अनुभव ने उन्हें दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।
3. डॉ. भैरप्पा हुबली के एक महाविद्यालय में दर्शनशास्त्र के व्याख्याता बने और ढाई वर्ष तक वहाँ काम किया और उसके बाद, छह वर्ष तक गुजरात के सरदार पटेल विश्वविद्यालय में व्याख्याता रहे। उन्होंने बड़ौदा विश्वविद्यालय से 'सत्य और सौंदर्य' विषय पर पीएचडी की। उसके बाद, वह 1967 से 1971 तक नई दिल्ली में एनसीईआरटी से जुड़े रहे। वह 5 वर्ष तक राष्ट्रीय प्राध्यापक रहे। उन्होंने 1962 से उपन्यास लेखन शुरू किया और अब तक, उनके 25 उपन्यास और 4 आलोचनात्मक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।
4. डॉ. भैरप्पा ने अंटार्कटिका और आर्कटिक सहित दुनिया के लगभग सभी देशों की यात्रा की है। उन्होंने भारत के विभिन्न हिस्सों के गांवों की यात्रा की है और वहाँ रहे हैं और यह पाया कि सांस्कृतिक रूप से सम्पूर्ण भारत एक है। इसमें उन्हें भारत की एकता के दर्शन हुए। भारत के इतिहास, संगीत, नृत्य और मंदिरों के अपने अध्ययन से उन्होंने अपने लगभग सभी उपन्यासों में देश की एकता का प्रतिपादन किया। वह देश के सबसे ज्यादा बिकने वाले उपन्यासकारों में से एक हैं। उनके उपन्यासों का अंग्रेजी के अलावा अधिकांश भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है जैसे मराठी, गुजराती, पंजाबी, ओडिशी, हिंदी, बंगाली, तेलुगू, तमिल, मलयालम आदि। उनके सात उपन्यासों का संस्कृत में अनुवाद किया गया है और संस्कृत में 4-5 बार उनका पुनर्मुद्रण हुआ है।
5. उनके उपन्यास 'मंद्रा' को 'सरस्वती सम्मान' पुरस्कार प्राप्त हुआ है। मूल कन्नड़ उपन्यास 'अवराना' का कन्नड़ में 65 बार, मराठी में 21 बार, अंग्रेजी में 22 बार पुनर्मुद्रण हुआ है। 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित 'दातु' का सभी 14 भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। 'साक्षी' का 12 बार पुनर्मुद्रण हुआ है। 'थंटू' का अंग्रेजी, मराठी, हिंदी और संस्कृत में अनुवाद हुआ है। 'बिट्टी' (श्री भैरप्पा की आत्मकथा) का 16 बार पुनर्मुद्रण हुआ है। कई विद्वानों ने उनके उपन्यासों पर पीएचडी की है। परीक्षकों ने इनमें से अधिकांश थीसिस की प्रकाशन के लिए सिफारिश की है और इन प्रकाशनों की सराहना की गई है। वंशवृक्ष, गोधुली, मठदान, नई-नेरालु, गृहभंगा पर फिल्म बनाई गई और इन्हें सर्वश्रेष्ठ फिल्म पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ कहानी पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ निर्देशन पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।
6. डॉ. भैरप्पा को सात विश्वविद्यालयों से डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया है। उनके उपन्यास 'दातु' (क्रॉसिंग ओवर) के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें साहित्य अकादमी की फेलोशिप से सम्मानित किया गया था, जो किसी बहुत वरिष्ठ लेखक को प्रदान किया जाने वाला साहित्य अकादमी का सर्वोच्च सम्मान है। उनके उपन्यास 'पर्व' को साहित्य अकादमी ने 20वीं शताब्दी का सर्वश्रेष्ठ भारतीय उपन्यास माना है। केंद्र सरकार द्वारा 'पर्व' का चयन करके चीनी और रूसी भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है। उनके उपन्यास 'मंद्रा' के लिए उन्हें 'सरस्वती सम्मान' से सम्मानित किया गया। असम साहित्य परिषद ने भी उन्हें सम्मानित किया। उन्हें 2016 में पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।